मालिनी छन्द

मालिनी छन्द की प्रकृति-

यह वार्णिक छन्द है।

मालिनी छन्द का लक्षण-

ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।

अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण, नगण, मगण, यगण तथा यगण आयें वह मालिनी छन्द कहलाता है।

उदाहरण-

सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं
मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।
इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।।

अन्य उदाहरण-

वयमिह परितुष्टाः वल्कलैस्त्वं दुकूलैः
सम इह परितोषो निर्विशेषो विशेषः ।
स तु भवति दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला
मनसि तु परितुष्टे कोऽर्थवान् को दरिद्रः॥

विशेष-

क) इस छन्द के प्रत्येक चरण में 15 अक्षर होते हैं।

ख) इस छन्द में क्रमशः 8 तथा 7 संख्यक अक्षरों पर यति होती है।

ग) इस छन्द का स्वरूप इस प्रकार है-

।।। ।।। ऽऽऽ ।ऽऽ ।ऽऽ

Dhananjay Vasudeo Dwivedi